वह आदमी

प्रताप सहगल

वह आदमी

कहानी

प्रताप सहगल

वह आदमी

महेश डलहौज़ी पहली बार आया था। अपनी शादी के तीस साल बाद। इससे पहले वह कई हिल-स्टेशन घूम चुका था, लेकिन डलहौज़ी के बारे में उसके मन में एक उजाड़ हिल-स्टेशन की छवि बनी हुई थी। इसलिए डलहौज़ी आना वह बार-बार टालता रहा।

डलहौज़ी में दाखिल होते ही उसकी छवि टूटने लगी। सड़कें किसी भी विकसित हिल-स्टेशन सी चिकनी और दोनों ओर हरे-भरे चीड़ के पेड़ थे। बीच-बीच में कच्चे पहाड़ दिख जाते थे। उन पर बने जल-बहाव के निशान यह संकेत दे रहे थे कि बारिशों में इन सड़कों पर भू-स्खलन आम बात होती होगी। हालाँकि कच्चे पहाड़ों को भी पेड़ लगाकर मज़बूती देने की कोशिश की गयी थी, लेकिन सम्भवतः वो कोशिश नाकाम रही।

घुमावदार सड़कों पर बलखाती गाड़ी के शीशे उसने खोल दिये और प्रदूषण-रहित हवा को अपने फेफड़ों में भरने लगा। साथ ही बैठी नीमा भी वही कर रही थी। किसी भी हिल-स्टेशन पर जाने का सबसे पहला अहसास महानगरों की प्रदूषण-भरी ज़िन्दगी से मुक्ति का अहसास होता है।

पठानकोट से डलहौज़ी पहुँचने में चार घण्टे लग गये। होटल में सामान लगा और फ्रेश होने के बाद भूख दस्तक देने लगी। ड्राइवर उन्हें गाँधी चौक ले गया। यहीं डलहौज़ी का मुख्य बाज़ार है। महेश गाड़ी से उतरकर किसी ठीक-ठिकाने जगह की तलाश करने लगा। ड्राइवर ने उसे शेरे पंजाब सहित तीन-चार रेस्तराँ के नाम बताये थे। वह और नीमा चौक के कॉर्नर पर बने क्वालिटी रेस्तराँ में घुस गये।

एक मेज़ पर महेश और नीमा आमने-सामने बैठ गये। रेस्तराँ की सजावट आकर्षक थी। हर कोने में अमूर्त पेंटिंग्स टँगी हुई अति-यथार्थवाद की दुनिया में ले जा रही थीं।

ठीक सामने वाली मेज़ पर महेश की नज़र गई तो वहीं ठिठकी रह गयी। उस मेज़ पर एक अनजान व्यक्ति बैठा था। उसे महेश ने पहले कभी नहीं देखा था। उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था जो बरबस महेश को उसकी ओर आकर्षित कर रहा था। महेश ने अपने आसपास नज़र घुमाकर देखा कि उसे कोई और भी देख-परख रहा है या केवल वही उसकी ओर आकर्षित हो रहा था। रेस्तराँ में अभी कुल चार-पाँच मेज़ों पर ही लोग जमा हुए थे और सभी अपने-अपने में व्यस्त। सामने कोने वाली मेज़ पर एक नव-विवाहित जोड़ा रोमांस में मशगूल था। दायीं ओर तीन विदेशी लड़कियाँ अपने आसपास से बेखबर नेटिव भाषा में बतिया रही थीं। पीछे की मेज़ पर एक अधेड़ पति-पत्नी और उनके दो बच्चे खाने के ऑर्डर पर एक-दूसरे से झगड़ रहे थे। किसी भी मेज़ पर महेश की नज़र एक-दो क्षण से ज़्यादा नहीं टिक रही थी। महेश की नज़र घूम-फिर कर उसी व्यक्ति पर केन्द्रित हो गयी।

महेश ने अनुमान लगाया कि उसकी उम्र साठ के आसपास होगी। सिर पर बाल कम और पूरी तरह पके हुए थे। गंदमी रंग और शरीर गठा हुआ लग रहा था। उसका चेहरा-मोहरा, बैठने का अन्दाज़ एक आकर्षक व्यक्तित्व का अहसास देता था। उसके हाव-भाव बता रहे थे कि वह भी यह बात जानता था। अपने व्यक्तित्व को लेकर शायद वह इतना आश्वस्त था कि वह अपने आसपास किसी को भी नहीं देख रहा था। कहीं उसके मन में यह भाव भी तैर रहा था कि दूसरों का ध्यान ही उस पर केन्द्रित होना चाहिए।

नीमा ने काम्बो खाने का ऑर्डर दे दिया था। काफी देर से फैली खामोशी को नीमा ने ही तोड़ते हुए पूछा-''उधर क्या देख रहे हो'' दरअसल उस व्यक्ति की ओर नीमा की पीठ थी और वह उस व्यक्ति को नहीं देख पा रही थी।

''ऐसे ही...सोच रहा था रेस्तराँ में सिर्फ़ यही व्यक्ति अकेला क्यों है'' कहते हुए महेश ने अपनी आँखों से ही उस व्यक्ति की तरफ इशारा किया। नीमा ने गर्दन घुमाकर उस व्यक्ति को देखते हुए कहा-''होगा कोई लोकल।''

‘‘नहीं...सैलानी है...उसके कपड़े, उसके जूते और उसके चेहरे के भाव।’’

तभी बैरे ने उस व्यक्ति की मेज़ पर चिकन टिक्कों से भरी प्लेट और उसके साथ एक नॉन लाकर रख दिया। वह अपने आसपास से उसी तरह से बेखबर उन्हें खाने लगा। महेश अभी भी उसे देख रहा था। उसे इस तरह किसी को देखना बेअदबी लग रही थी, लेकिन वह अपने आप को रोक नहीं पा रहा था।

महेश कहीं अन्दर ही अन्दर उस व्यक्ति के एकान्त से रश्क कर रहा था। इन दिनों उसके और नीमा के रिश्तों में एक तनाव आ गया था और वे उस तनाव को तोड़ने से मुक्त होने के लिए कुछ-कुछ दिनों के लिए दिल्ली से बाहर निकल आते थे।

महेश को कहीं ऐसा भी लगने लगा कि ज़रूर उस व्यक्ति के जीवन में भी कोई तनाव होगा और वह उस तनाव से मुक्त होने के लिए ही अपनी तरह से एकान्त जीना चाहता है। महेश नहीं जानता था कि एकान्त जीना क्या होता है। वह तो जहाँ भी जाता है, नीमा हमेशा उसके साथ होती है। वह कई बार साथ-साथ होते हुए भी एकान्त जीने की कोशिश करता लेकिन साथ-साथ रहते हुए, एक-दूसरे को टोकते हुए, एक-दूसरे का ध्यान रखते हुए क्या एकान्त जिया जा सकता था?

इसी प्रश्न को लेकर महेश के मन में कुछ केंचुए रेंगने लगे थे। एक-दूसरे से लिपटे हुए केंचुए। महेश उन केंचुओं की पकड़ में था कि वेटर ने मेज़ पर प्लेटें सजा दीं। महेश का मन उन केंचुओं की पकड़ से छूट झकाझक सफ़ेद प्लेटों में अटक गया। शायद उसे भूख सताने लगी थी।

वह व्यक्ति चिकन-टिक्कों की प्लेट खाकर नैपकिन से अपने होंठ साफ़ कर रहा था। थोड़ी ही देर में वह अपना बिल चुकाकर रेस्तराँ से बाहर चला गया, लेकिन महेश अभी भी उसके व्यक्तित्व में उलझा हुआ उसके एकान्त से ईर्ष्या कर रहा था।